कीर्ति संजीवनी

श्री मते रामानुजाय नमः

श्रीमान दीनानाथ चरण कमलेभ्योनमः

लेखिका

सिद्धि श्री १०८ श्री लक्ष्मी जी कृपा पात्राधिकारिणी
श्री मती श्री परिहारिन महारानी सा० जू देई देवी
कीर्ति कुमारी रीवाँ राज
विन्ध्य प्रदेश मध्य भारत

संवत् २०११ गुरुवार मार्ग शीर्ष
कृष्ण पक्ष १५

ता० २५-११-५४

मु० किला रीवाँ

कीर्ति संजीवनी

श्री मते रामानुजाय नमः

श्रीमान दीनानाथ चरण कमलेभ्योनमः

लेखिका

सिद्धि श्री १०८ श्री लक्ष्मी जी कृपा पात्राधिकारिणी
श्री मती श्री परिहारिन महारानी सा० जू देई देवी
कीर्ति कुमारी रीवाँ राज
विन्ध्य प्रदेश मध्य भारत

संवत् २०११ गुरुवार मार्ग शीर्ष
कृष्ण पक्ष १५

ता० २५-११-५४
मु० किला रीवाँ

॥ ॐ ॥

बंदना

सोरठा

श्री गुरु कृपा निधान। दया करहु करुणायतन ॥
कीर्ति कृष्ण पदध्यान। अचल रहै गुन गान युत ॥

अर्पण

सवैया

बिनती भव तारन है जु यही। श्री चर्ण बन्दि मुद वाँछ कृतै ॥
गुन गान तुम्हार शदा पदनिष्ठ। ह्रदय प्रति स्वाँश चहूँ सुवृतै ॥
यक सार यही संसारिन को। सोइ देहु रमेश निवार मृतै ॥
संजीवनि कीर्ति करो स्वीकार। उदार सुदान पुकार श्रृतै ॥

दोहा

यह संजीवनि कीर्ति को। देहु शरण आवास ॥
त्रास मिटै संसार की। पूर करहु सोइ आस ॥

समाजीबचन

बर्धक प्रेम सुस्वजन के। कृष्ण चंद्र भगवान ॥
जप तप मख सत कृत्यसे। प्रबल भाव गुनगान ॥
श्री राधा अरु गोपियाँ। भाव भक्ति की मूर्ति ॥
नहिं बिसरत छन हूँकबौं। लगी विमल पद सूर्ति ॥
मनमोहन कोहूँ नही। चैन बिना जन केर ॥
जाको है जो भावना। तासो तैसो मेर ॥

विजनिश

वार्ता—श्री दीना नाथ सरकार दीन भक्त जनों के शदा से हीं हितू हैं प्रेम नेम धारणा करने वाले भक्त धन्य हैं अनेको सतकर्मों से जो नहीं समझे जाते आदि देव अव्यक्त महापुरुष पार ब्रह्म अखिलेश वही श्री दीन बंधू श्री स्वजन सनेही निरंजन। प्रेम भावसे आपी आप प्राप्त हो जाते हैं और भक्त जनों की बाँछना पूर्ण करते हैं॥

श्री वृषभान नंदिनी राधा रानी और गोपियों ने वही अखिलेश शर्वेश नारायण सच्चिदा नंद को प्रेम भाव से आकर्षित कर लियो है बिना दर्श पर्श इनका जीवन ही नहीं है ऐसी महा भक्ति वारियों के बिना श्री जगत पति जगदीश हूँ को चैन नहीं पड़ती जैसी भावना वह स्त्रजनियाँ करती हैं वहीं भाव से पार ब्रह्मपरमेश्वर स्वयम् जा जा मनो कामनायें पूर्ण करते हैं जहाँ शेष महेश गणेश दिनेश बिरंचि नारद शारद की गम्य नहीं वहाँ गोपों की ढोटिनियाँ श्री परम भक्ति मती राधा रानी जू के सम्पर्क से अखिलेश निरंजन सरकार की शर्ण को प्राप्त कर परमा नंद की अमर पदवी को पहुँच कृत कृत्य हो जाती हैं ऐसे परम हितैषी कीं शरण की कीर्ति क्यों न आश्रित हो मोंद प्राप्त करै

ड्राफ पहिला शीन पहिला ग्राम बरसानो

दोहा

प्रियतम राधा सखिन के। वैद्य बने गोपाल॥
भानु नगर गवने प्रभो। साँचे हितू कृपाल॥

विजनिस

वार्ता—श्री मन मोहन प्यारे वैद्य रूप से बरसाने जाते हैं।

तर्ज राधेश्याम

अँग सुघर अंगरखा शिर्पगिया कटि धोती ढीली ढाली है॥
उत्तरी वस्त्र काँधे झोली मूरति सुचि शोभा वाली है॥
मन हरण अंग लट पटी चाल अट पटी रसीली बोली है॥

घुँघुँरारी अलकैं झूँम रहीं नट खटी बान अन मोली है
चख चंचल तिरछी चितवन पै बलिहारी सब दरशन वाले ॥
विहरत बरसाने बोथिन में श्री वैद्य मनोहर छबि वाले ॥
काँधे झोली औषधि बूटीलै फिरत जगत पति बरसाने ॥
मधुरी पुकार हूँ वैद्य दवा लैहो कोई दुख निरसाने ॥
हूँ औषधि वारो करूँ दूर आजार सुनो हे बीमारो ॥
आवो लेवो हो मर्ज दूर याही जीवन मम रोज गारो ॥

विजनिस

वार्ता—श्याम सुन्दर वैद्य जी अङ्ग में ढीला अँगरखा ढीली धोती शिमें पगिया गले में उपन्ना डाले लट पटी मन भावनी चालपै बरसाने पहुँच कर गलियों में मधुरी पुकार कर कर फिर रहे हैं वैद्य जी दवाइयों की तारीफ कर कर जाहिर करते हैं)

वैद्य जी वचन—

वैदहूँ बैद नारी को बैद कॉन आँख पेट की मर्जों का वैद अच्छी २ दवाइयों का बैद अरे बीमारो मोपै आवो हालत बतावो अवश्य २ दूर हो जायेंगे जाके जो मर्ज होंगे आने वालो गहर होने पर रुकूँगा ही नही क्योंकि दूर का रहेने वाला हूँ+आवो मनचही दवाइयाँ मो पै से लेलो+मेरी यही रोजो है कहीं दूसरी जगह जाकर अपनी दवाइयाँ बेचूँगो क्या याहीं बैठा रहूँ गो।

समाजी—

वार्ता—(विजनिश) वैद्य जी की पुकार बरसाने मे येक येकन द्वारा फैल रही है सखियाँ ज्योंहीं पुकार सुनती है त्योंहीं उतावली से आती जाती हैं येक येकन कूँ टेर रहीं हैं।

शैर

सुनी गोपियाँ वैद्य आयो भलो॥
परस्पै कहैं बीर यापै चलो॥

बहुत माँदी चम्पा दिखाऊँ तिसे ॥
लिवा लाऊँ जाऊँ पुकारे जिसे ॥

एक सखी

वार्ता—अरी वीर येह जो नयो वैद्य आज आयो है और दवाइयों की गहेरी तारीफें पुकार २ कह रह्यो है चलो तो वाके समीप। अच्छी दवाइयाँ वारो बड़ो हीं भलो सो लगे है।

दूसरी सखी

वार्ता—अरी सो तो मैं हूँ आई हूँ चलो चलो पूँछें जलदी चलो नहीं वह कहीं और ठौर चल्यो जावे गो।

तीसरी सखी

वार्ता—अरी। चम्पा माँदी पड़ी है कछु खाती वाती नहीं है चलो तो वाही की दवाई कर बेकूँ या वैद्य जीको वाही पे लिवा चलें। देखें याकी दवाई वापै क्या भलाई करैगी।

और सखियाँ

वार्ता—अच्छी सुध तोकूँ आई है जरूर २ वाही की दवाई होनी चही वाके अच्छी होजाने पर हम सबहीं वैद्य की दवाई की ग्राहक बनेंगी

पहिली सखी

वार्ता—ठीक है ठीक वीर चलो। (वैद्य जी के समीप सब सखियाँ जाती हैं और पूँछती हैं)

शीन दूसरा
गोपियों का

वृषभान पुर महल

समाजी और कुमुदा वचन—

शैर

गई तुर्त कुमुदा अनेकों अली। कही वैद्य आये हमारी गली ॥
कहो कौन विधि की दवाई करो। पड़ी चम्पा बीमार सो दुख हरो ॥

चलो संग मेरे दवा देने वाल । दिखाऊँ उसे जो पड़ी है बेहाल ॥

वार्ता—अरे वैद्य जी त्यारी दवाई कैसी और कौन २ सूँ कष्ट हरन हारी है मेरी बहेन चम्पा माँदी है कुछ खान पान हूँ वाने कई दिनों से नहीं करयो है वाही की दवाई की दरकार है वाहीं चलियो वाको अच्छो कर दीजो याही वरे तुमपै आई हूँ ।

वैद्य जी का बचन—

शैर

दवाई हमारी बड़े हेत की । अनेको हटाई व्यथा क्लेश की ॥
चलो तो दिखावो वो वीमार को । दवाई करी नष्ट आजार को ॥

वार्ता—अरी सखी तूँ क्या पूँछे है मेरी दवायें अक्सीरें कष्ट नाशक हैं वह वीमार पै मैं चलूँ हूँ चलो तुरत हीं आजार हटाऊँ गो ।

सीन तीसरा

स्थान चम्पा महल

समाजी वचन—

दोहा

गई सखी लै वैद्य को । चंम्पा के आगार ॥
देखि नब्ज बोले बिहँसि । याके रोग बिकार ॥

वार्ता—(बिजनिस) वैद्य जी चम्पा के आवास जाकर चम्पा की नब्ज देखते हैं फिर हँस कर कहते हैं ।

वैद्य

वार्ता—अरी सुन तोरी । (कुमुदा) वैद्य जी कहा कहो हो नब्ज कैसी है । (वैद्य जी शिर्हिला कर) गाढ़ा रोग है ।

कुमुदा वचन—

(व्याकुलतासे) वैद्य जी कैसो गाढ़ो रोग व्याप्यो है अच्छो करोगे कि नायँ ।

दोहा

औषधि दे नीकी करो। तुमतो वैद्य सुजान ॥
याके जो संताप हो। करै दवाई हान ॥

वार्ता—वैद्य जी तुमही ने तो अपनी दवाइयों की लम्बी २ तारीफें की ही अब वही दवाई देते क्यूँ नहीं पायँ परूँ हूँ मेरी चम्पा को अच्छो कर दीजो मैं हूँ समझूँ हूँ की त्यारो रूप भलो है वैसी हीं भली दवाइयाँ होंगी अब देर क्यूं कर रहे हो अपनी झोली वोली खोलो ना ॥

वैद्य जी वचन

दोहा

नहीं दवाई है कछू। याके रोगन केर
तुम्हीं युक्ति ढूँढ़ो कछू। करो नहीं अब देर ॥

वार्ता—अरी याके भारी रोग लग्यो है मोपे ऐसी दवाई हई नहीं याते तूहीं याकी भलाई की युक्ति कर मैं तो जाउँ हूँ।

समाजी वचन

दोहा

वैद्य गये मग दूसरी। चम्पा रोग हैरान ॥
उठि बैठी हँसि सेजपर। वैद्य दर्श सुखवान ॥

विजनिश

वार्ता—(वैद जी गये। यहाँ चम्पा हँस कर सेज से उठ कर कहती है)

चम्पा वचन

अरी कुमुदा बहेन अब तो में नीकी हूँ वैद्य की दवा नहीं तो दर्श हीं आरोग्य करन वारो व्है गयो अब मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ।

कुमुदा और समाजी

(प्रसन्नता से हँस कर कहेती है) अरी हाँरी अब तों भली दीखे है वह वैद्य राज काँ गयो।

समाजी

विजनिश

कुमुदा उलट कर वैद्यराज को देखती और ढूँढ़ती है पुकारती है)

कुमुदा वचन

अरे वैद्य जी काँ हो कछु कह्यो वह्यो नहीं चुप्पी सोध कां कूँ चले गये त्यारो दर्श अच्छो हो आवो त्यारो सतकारो करूँ (टेरती इधर उधर ढूँढ़ कर लौट आती है कहेती है) अरी चम्पा वह वैद्य याँ नहीं है एक छण हीं में जाने काँ गयो।

चम्पा वचन

रोजगारियों को योंही अपने काम की परवा रहेती है और कईं गयो होय गो।

कुमुदा वचन

अच्छो मैं अबहीं ललिता पै जाकर सारा हाल बता कर वैद्य को ललिता के याँ ले जाती हूँ।

चम्पा वचन

अच्छो वहेन जावो।

(विजनिश)

कुमुदा जाती है आगे ताही मग सूँ वैद्य जी को जाते देख टेरती है)

कुमुदा वचन

अरे लट पटे वैद्य जी काँ को जा रहे हो चलो ललिता पै वह हूँ दुखी है तनक देखते जावो।

वैद्य वचन

काँ है त्यारी ललिता।

कुमुदावचन

(हाँथ से बता कर) वह है ललिता को घर वहीं पै चलो।

वैद्य वचन

अच्छो चलो (दूनो जाते हैं वैद्य की पुकार सुन आगे ताही मगसूँ चन्द्रा वली आ रही है समीप आकर कहती है)

चन्द्रा वलि बचन

अरे नये छबीले वैद्य जी मेरी सुन लो (वैद्य जी खड़े हो जाते हैं कुमुदा हूँ खड़ी व्है गई)

चंद्रा वलि

शैर

मेरे वैद्य भारी व्यथा छाई है। विकल हूँ यही सेन सुखराई है॥
नहीं चैन दिन कोन निशि नींद है। भयो काह देखोतो तनहीन है॥

वार्ता—मोकूँ भारी व्यथा है वैद्य जी कछु दवाई दीजो जासो भली हो जाऊँ

वैद्य जी वचन

शैर

दवाई किमाहिमा अपूरब हमार। चलो वाहीं देखूँगा त्यारो अजार॥

वार्त—वाहीं चलो जाँपै में जारहा हूँ और हूँ वीमारों के वाहीं आनों चहो क्योंकी अवार हो रही है हम अब याँ सो जाने चाहते हैं

ड्राफ दूसरा

शीन पहिला

ललिता महल

समाजी—

वार्ता—(विबनिस) कुमुदा चंद्रावली और वैद्य जी ललिता पैं जा रहे हैं ललिता पुकार वैद्य जीकी सुन चुकी है कछु गड़बड़ी वाहू के है याते अपनी सेवि-

कांत्रो को वैद्यराज को बुला लाने को पठवा चुकी हैं वैद्य जी कबतक में आयेंगे याही इन्तजार में द्वारे की ओर हेर रही हैं। वाँसे कुमुदा चन्द्रावली वैद्यजी और हूँ अनेको सखियाँ ललिता पै आगईं। ललिता वैद्य को देख लुभा जाती है अपनों सम्हालो कर घूँघट मूँपै ढक वैद्य जीको आदर से आसन देती हैं और बहिन कुमुदा चन्द्रा वली कहकर सबको बैठाती है। सब यथा तथा बैठ जाते हैं कुमुदा कहती है.) अरी बीर सुन।

कुमुदा वचन—

दोहा

बड़े चतुर येह वैद्य जू। चम्पा पड़ी बेहाल ॥
ताको बिन औषधि यतन। कष्ट हरयो तत काल ॥
ताही सूँ पीछे लगी। आई हूँ अतुराय ॥
रहूँ व्यथित उर रोग से। निवरि रोग सब जाय ॥

वार्ता—अरी वीर या वैद्य के दर्शन हूँ रोग निवारैं हैं चम्पा को बिना दवाई दीने हूँ अच्छो करयो हो ताही सूँ में याके पीछे लगी आई हूँ जासो मेरो उरव्यथित रोग निवर जावे।

ललिता

अच्छो कियो अब याँ सबहीं को रोग निवरै गो दवाई नहीं तो दरशन हीं सही।

समाजी वचन—

दोहा

यों कहि ललिता प्रियंबदा। कुमुदा हाँथ बढ़ाय ॥
चांद्रा वलि युत गोपियाँ। निज निज व्यथा सुनाय ॥
नारी देखत वैद्यजी। यक येकन गहि हांथ ॥
देख रेख करि कहत यूँ। सुनो सबै यक साथ ॥

वार्ता—(विजनिश) वैद्य जूको ललिता चंद्रावलि कुमुदा प्रियंवदा अपने २ हाँथ बढ़ा कर नारी दिखाती हैं। नारी २ से नारी देख भाल रोग को परेखो कर वैद्य जी कहते हैं।

वैद्य जू बचन—

अरी त्यारो हाँथ वाँथ तो नीको है समयानुकूल कछु गर्मी शर्दी व्यापि गई होवे गी नाजुकता सूँ सहन न कर सकने की हीं बीमारी लगी समझ पड़े है और भला नई नवेलियों को आजार हीं कौन होयगो त्यारो आजार त्यारे हीं बस का है या मर्ज की दवा हम पै नहीं है अरी बावरी हमतो रोगों के वैद्य हैं तुम सरीखी उमंग वारियों के नहीं याते अब जाऊँ गो ऐसी वैसी बाती नहीं है जो साफ २ बताई जावे अपने आप समझो और अपना प्रबंध करो हमतो दवाई करन वारे रोज गारी हैं कहीं रोगी मिलहीं जावै गो।

समाजी वचन—

(विजनिश) वैद्य जी अपनी झोली गोली सम्हाल कर जाने वाले हैं तब ललिता रोक कर कहती है।)

ललिता, चंद्रावलि, कुमुदा, प्रियंवदा वचन—

शैर

दवाई नहीं तो हरज है नहीं। व्यथित हूँ सही पर मरज है नहीं॥
कही बात तुमजो सुनी मानी है। सही होयगो हमतो दीवानी है॥
बसी चश्म सूरत छली छैल की। नहीं है दवाई कछू ऐल की॥
कही चंद्रावलि हूँ सुनो बातसो। लगनियाँ लगी मेरी बल भ्रातसो॥
यही रोग की है व्यथा तन छई। न भावे कछू रोग याही दई॥
है बिगड़ी है हालत सभी बालकी। दवाई किथी चाह नँद लाल की॥
नहीं तुमपै औषधिये है तो सही। चलो प्यारी जू पै जो मानो कही॥

ललिता वचन—

वार्ता—वैद्य जू दवा नहीं है तो न सही क्योंकि मर्ज हूँ टेढ़ी है वह है श्याम सुन्दर की नजर जो बज्र फोरने वारी है याते जो हम सब कहैं वह सुन लो फिर जो भावे वह करो।

चंद्रावलि वचन—

वैद्य जी हम सभी गोपियों की हालत खराबी का कारण केवल यही है की नंदलाल के विना दर्शन दीवानी हैं।

कुमुदा बचन

अरे वैद्य जू जो हमपै दवाइयाँ तुम्हारी नहीं चल सके हैं तौहूँ ठीकोई है या रोगी बुरो है जापै लग जावे है ताको छोड़े हीं नहीं॥

ललिता बचन

वैद्य जी और कहीं न जावो रोजगार वारे हो ताही सूँ महारानी राधा जू पै चलो वहाँ सारी दवा वह ले लेवेंगी और त्यारी झोली रत्नों से भरवा देवेंगी॥

वैद्य जू का बचन

अच्छो चलो

समाजी वचन

(विजनिश)

वैद्य जू के सँग ललिता चंद्रावलि कुमुदा इत्यादि सखियाँ महारानी राधा जू पै परस्पर वतराती जा रही हैं॥

शीन दूसरा स्थान रास्ता

दोहा

चले विहँसि सँग वैद्य जू। अमित सखिन के साथ॥
करत बतकही परस्पर। गहियक येकन हांथ॥

ललिता और समाजी बचन

दोहा

युक्ति यही नीकी अली। प्यारी हूँ बेहाल ॥
वैद्यव्याधि हरि हैं अवशि। दर्श प्रताप विशाल ॥
हूँ मैंहूँ नीकी अरी। बोली सब अनुराय ॥
दूर भई सारी व्यथा। निरखत हीं दुख जाय ॥

ललिता और समाजी तथा सखियाँ

वार्ता—वीर मैंहूँ चम्पा सरीकी नीकी हो गई।

चंद्रा वलि वचन

अरी हाँ री मेरी हू ँ सारी वीमारी भज गई।

कुमुदा वचन

मैं तो प्रथम हीं दर्शनों को लहीं और अच्छी हो गई ही।

ललिता बचन

प्यारी हूँ विकल हैं ताही सूँ याको ले चलू ँ हूँ जासो वहू अच्छी हो जावे याको रूप रंग वड़्यो हीं भल्यो है।

चंद्रा वलि बचन

लटपटी चाल वारो अच्छो तो हइ है।

समाजी

विजनिश

यों हीं वत राती हुई सखियाँ महारानी राधा जीकी पौर पै पहुँच जाती हैं

शीन तीसरा प्यारी जी की पौर

ललिता बैद्य जू सो कहेती है

वैंद्य जू या महारानी की पौर है याँ पैं वैठि जाइयो में महारानी को आदेश लेवन कूँ उनपैं जाती हूँ आदेशो लाऊँ हूँ फिर वाहीं पैं तुम्हें हूँ लिवा जाऊँगी।

समाजी

(अच्छो कह कर वैद्य जू बैठ जाते हैं।

ललिता बचन

दोहा

हाँथ जोड़ विनती करूँ। महरानी सुनि लेहु॥
एक वैंद्य आयो भलो। आवन आयसु देहु॥

वार्ता—महारानी एक अच्छी छवि वारो झोली धारी वैद्य आयो है पौरि पै खड़्यो है कहा आज्ञा होय है।

महारानी जी वचन

शैर

भलो वैद्य पौरी पै आयो सुन्यो। वुलावो लखूँ मैं हुँ अच्छो गुन्यो॥

वार्ता—अरी वाको बुला ला देखिवे कूँ मन चाह रह्यो है।

ललिता वचन

जो आज्ञा जाऊँ हूँ (कह कर जाती है)।

(ललिता वैद्य के निकट जाती है पहुँच कर कहती है)

ललिता बचन

चलिये वैद्यजू महारानी पै॥

समाजी बचन

(विजनिश)

वैंद्यजू मनहीं मन हर्षित हो झोली पगिया सम्हाल डग मगी चाल से)

वैद्य बचन

अच्छो चलो (कहकर ललिता के पीछे २ चल देते हैं)

शीन चौथा महारानी जू का महल

समाजी बचन

दोहा

गइ लिवाय ललिता तुरत । महरानी के पास ॥
शीश नाय बैठे मुदित । प्रिय निरखत छवि तास ॥

विजनिश

बार्ता—ललिता वैद्य को संग लिये महारानी जू पै पहुँच जाती है और हाँथ से बता कर कहती है)

ललिता बचन

वैद्य जू महारानी जू ये हैं (वैद्य जू हाँथ जोड़ शिर झुका देते हैं)

महारानी जू

बार्ता—भले आये वैद्य जू (हाँथ के इशारे से कहती हैं) याँ वैठ जाइयो त्यारो रूप और पगिया झोली सबहीं तोनी की अट पटी है ।

समाजी

विजनिश

ललिता चंद्रानना चंद्रावलि प्रमुदा कुमुदा चित्रा आदि सखियाँ परस्पर हँसती बिलोकती हैं वैद्य जी बैठ जाते है प्यारी मनहीं मन प्रसन्न हो रहीं हैं जानती नहीं है परन्तु हृदय उमड़यो ही जा रहा है । इधर वैद्यराज की यही दशा है प्रिय को देखते हीं आकुली मनहीं मन उठ रही है अब झोली गोली की सम्हाल हीं नही हो रही है निगाहें इरछी तिरछी वार बार लालाइत प्यारी हींको विलोकिवे चाह रहीं है परन्तु वैद्य रूप होने से कछु बस नहीं चल रह्यो है याते सम्हल जाते हैं)

प्रिय बचन

दोहा

पूँछत तुमसे वैद्य जू। कहाँ तुम्हारो ग्राम ॥
कौन दवाई वार हो। कहो आपनों नाम ॥
दवा युक्ति स्याने करें। तुम तो अति सुकुमार ॥
वड़ी बुद्धि वारे सुनो। मोपै लग्यो अजार ॥

बार्ता—वैद्यजू त्यारो ग्राम कहाँ है और कहा नाम है अवहीं उमर थोड़ी सुकुमारो गात फिर भला रोग परेखिवे की युक्ति तुममें प्रबल क्यूँ देखी जा रही है यह तो स्यानों का काम है जो की वह हर दशा जानन वारे होते हैं कहो तो इतनी बड़ी बुद्धि काँसूँ पाई.

वैद्यजू बचन

दोहा

बारे ते बाबा हमें। वैदक दीन पढ़ाय ॥
ताही से समझूं सबै। औषधि युक्ति उपाय ॥
नंद ग्राम में बास है। नाम गोपालू जान ॥
वैदी कृत रोज गार है। यही जीविका मान ॥

बार्ता—महारानी मोकूँ बाबा बारे हीं सो वैदकपढ़ायो और औषधि विधि युक्ति सबहीं खूब समझायो हो ताही सूँ मैं भली भाँति रोग पहचानूँ और औषधी करूहूँ मेरी गोली लाखों मर्जों को दूर करने वाली हैं इतनी ही उमर में मों पै से अनेकों व्याधि व्यथित रोगी आराम पा चुके हैं नई वई वैदी नहीं है। महारानी आज मालों झूठी काहे कूँ बोलूँ गो।

महारानी जी

गाना ठुमरी तर्ज

भले आये झोली वाले बैदा देखो मेरी नारी वैदा देखो मेरी नारी रे देखो मेरी नारी ॥

विकल रहूँ दिन रात नींद नहिं गात सम्हाल्यो जात ।
करो दवा कछु ऐसी वैद्य जासूँ जाय विमारीरे देखो मेरी नारी ॥१॥
खान पान कछुहूँ नहि भावे तन हूँ सूख्यो जात ।
याही रोग अड़्यो सबही दिनकैसे जीवन धारी रेदेखोमेरी नारी ॥२॥
पड़ी शेज बिलखूँ तड़पूँ में अति दुख सह्यो न जात ।
कीर्ति कष्टकूँ टार गोपालू तेरी औषध भारी रे देखो मेरी नारी ॥३॥

वार्ता—वैद्य जू त्यारी औषध अच्छी की मोकूँ तब्हीं प्रतीत पड़ेगी जब मेरो गहेरो रोग दोषदूर करोगे तुमतो देखहीं रहे हो मेरी बीमारी और बेवसी दशा चौंसठ हूँ घड़ीं मोकूँ यही निगोड़ो रोग ग्रस्यो रहै है वैद्यजू मोयँ नीकी करिवे कीयतन करो

गाना ठुमरी+

समाजी

(वैद्य जू और महारानी जू संम्मिलित)

+देखो तो मेरी नारी-वैद बड़े तुम वैद बड़े ॥
कबकी विकल हूँ में कल छिन नाहीं ॥
रोग कड़े—कड़े जू मोपै भारी वैद बड़े ॥
देखो तो मेरी नारी वैद बड़े ॥१॥
वैद गहत कर कहत नवज तखि ।
नैन गड़े—गड़े तौपै प्यारी नयन गड़े वैद बड़े देखो तो ॥२॥
जानत दवा न कीर्ति कुमारी चित्त अड़े । अड़े गिरधारी
वैद बड़े देखो तो मेरी नारी वैद बड़े ॥३॥

महारानी । वैद्य जू

वार्ता—वैद्य जू त्याँरी बुद्धि बड़ी ही तनिक मेरी नारी तो देखो ।

समाजी

(विजनिश)

महारानी राधा प्यारी अपनो हाँथ वैद्य जू को दिखाने को बढ़ा

देती हैं वैद्य जू नब्ज देखते हैं अच्छी प्रकार नारी देख कर हाँथ छोड़ चुप रह जाते हैं)

महारानी

वार्ता—वैद्य जू नारी की कहा दशा हैं।

वैद्य जू

नारी में तो कैंछु आजार जान्यो हीं नहीं जावे है वहुत भाँति परेख्यों हों खिन्नता अवश्य भारी है ताहीं सूँ कछु बोल्यो ओल्यो नहीं त्यारी नारी की गति कठिन है।

महारानी

अच्छो हो जो प्राण हूँ निकल जावें।

वैद्य जू

वार्ता—महारानी क्षमा करो त्यारी नारो यही बतावे है की त्यारी आँखन में काऊ को बसेरो है पक्की लगन है ताहीं सूँ रोग अट पटो है भला याकी दवाई मो पै से कैसे मिलेगी

समाजी

(विजनिश)

महारानी वैद्य की बात सुनकर ऊर्ध स्वास ले कुम्हिलाई सी हो गई फिर धैर्य धर कर बोलीं

महारानी बचन

शैर

कही वैद्य साँची तु व्याकुल हुँ मैं। बिना दर्श मोहन के आकुल हूँ मैं॥
बिना दर्श मोहन के याही दशा। बिकल हूँ दिवस निशि वही मन बसा॥
कहो तो भला याकी क्या युक्ति है। नहीं बस में है मन न तन शक्ति है॥
वार्ता—वैद्य जू मेरे ऐसे लोभी नयन हीं हैं बिना मन मोहन प्यारे के दर्शन चैन

हीं नहीं लेते मन हूँ बावरो सो वाँहीं लग्यो रहै है फिर भला ऐसी दशा क्यूँ न रहे वैद्य जू कछु याकी युक्ति नहीं है जो मैं यासो मुक्त होऊँ

वैद्य बचन

शैर

प्रबल रोग तोकूँ प्रिया जू ग्रस्यौ । नहीं याको युक्ति है रग रग ग्रस्यो ॥
दवाई नहीं याकी है मो पहीं । प्रबल रोग त्यारो छुटेगो नहीं ॥
वार्ता—महारानी जू यह त्यारो प्रबल रोग मो पै न छूटैगो ।

समाजी बचन

शैर

ढले नीर द्दग से महारानी के । दिवानी निरा ध्यान सुख दानी के ॥
प्रिया की विकलता लखी वैद्यराज । भरे प्रेम उमगे छली वैद्यराज
तुरत कर पकड़ि लीन्हे उरसे लगा । भये वैद्य मुर्छित पड़े वहि जगा
सखी देखि प्रिय युन अचंभित भई । दशा वैद्य जू कीये कैसी भई

ड्राफ तीसरा शीन पहिला महारानी जी का महल

(विजनिश)

वार्ता—वैद्य राज की वाणी सुन प्रिय जी के द्दगों से अश्रु ढल पड़े क्षण इक सुर्त हीन हो गई फिर धैर्य धर सम्हलजाती हैं व्याकुलता से मलीन हैं महरानी की ऐसी दशा वैद्य जू से देखी ना गई शीघ्र उठकर प्रिया को अंक में लगा स्वयम व्याकुल हो मुर्छित गिर जाते हैं यह देख महारानी सखियों के युक्त अचंभित हो जाती हैं)

तर्ज राधेश्याम

मुर्छित लखि वैद्य प्रिया बोली यह अङ्क भरयो मोहिं अतुराई ॥
पगड़ी वालो यह कौन सखी देखो तो भला टुक ढिग जाई ॥

महारानी राधा जू

वार्ता—अरी सखीनेक देख तो सही यह मोकूँ अङ्क भरन वारो पगड़ी वालो कौन है ।

तर्ज राधेश्याम

ललिता निरखी मुख भली भाँति बोली यह नंद दुलारो है ॥
परखन वारो हम अबलन को वाही ने झोली धारो है ॥
लखि प्रेम प्रबल प्रिय जू तेरो यह ताही सूँ हैं मुर झानो ॥
महारानी तेरो प्रेम धन्य अखिलेश तोहि सूँ अर झानो

ललिता वचन

वार्ता—अच्छों महारानी जू देखूँ हूँ ।

(विजनिश)

चंद्रानना चंद्रा वलि कुमुदा इत्यादि सखियाँ अचंभित हैं ।

चंद्रानना

अरी सखी यह वैद्य महारानी को अंकलेने वारो कौन है चलो तो देखे ।

समाजी

(विजनिश)

सब वैद्य जू को देख रहीं हैं पगिया वगिया शिर से गिर गई है घुँघुँरारी अलकें मुख पर बिथुर रहीं हैं अचेत वैद्य जू पड़े हैं ललिता जो पहिले हीं वैद्य की छवि पर मोहित थी मन हीं मन दुखी हो कहती है)

ललिता वचन

याको कहा भयो यह कौन है याँ अचेत होनो और अंक लगानो महारानी को याके योग्य हीं नहीं फिर कहा कारण है जो

या वैद्य जू निधड़क व्है अचेत पड़यो है समीप जाके अच्छी प्रकार देखूँ तो सही (ऐसा कह कर ललिता अच्छी प्रकार देख रही है देख भाल कर समझ जाती है भारी उमंग से मुसकुरा कर प्रिया जी से कहती है)

ललिता

वार्ता—महारानी जू यह झोली वारों वैद्य श्री नंद जी को लड़ेतो लाल है यह प्रेम की परीक्षा लेवन वारो अखिलेश्वर आपी अचेत व्है रह्यो है त्यारो प्रेम धन्य है जामें ये त्रिगुनेश्वर पार ब्रह्म निरंजन तोसूँ अरझ्यो है।

समाजी

तर्ज राधेश्याम

सुनि प्रिया प्राण धन जीवन हैं आतुर निरखत नट नागर को ॥
मुख पोंछि गोद शिर्धारि सँवरत अलक धन्य कहि आगर को ॥
चित्रा चंद्रानन चंद्रा वलि ललिता व्है मग्न विलोकि रही ॥
गद् गद् गर नीर ढले प्रिय के पिय की महिमा नहिं जात कही ॥
निरधन के धन निर्बल के वल दुखियों के जीवन प्राण हरी ॥
श्री कृष्ण कीर्ति के शर्ण बसे कहो कौन वाँछित सुख न भरी ॥

विजनिश

वार्ता—चंद्रानना चंद्रा वलि चित्रा ललिता इत्यादि सखियाँ मगन विलोकि प्रेम में लपेटी सी व्है रहीं हैं महारानी राधा जी के नेत्रों से प्रेम अश्रु प्रवाह लगी है जस तस धैर्य धर कहती हैं)

महारानी जू

वार्ता—अरी सखी प्रिय तम प्यारे की अपूर्व महिमा कछु कही नहीं जावे है।

चंद्रानना

महारानी धन्य त्यारो प्रेम है जापे ये फस्यो है याको वेद हूँ तो नहीं जाने हैं ॥

ललिता

यह जगदीश निर्बलों का हितकारी है ना ताही सूँ हम अबलों की दया याके आपी आप भरी है।

चित्रा

सो तो साँचोई है।

चंद्रावली

अरीं यह युग युगों में अपने दीन आश्रितों की कामनायें पूर्ण करने हारो है।

ललिता

ठीक है ब्रम्हा कोहूँ तो विधाता है फिर क्यूँ न गरीब जनों का दुख हरे ।

समाजी बचन

दोहा

ब्यारि ढारि पग दावि द्रुत। धोय चन्द्र मुख दीन।
चेत लहे मोहन तुरत। खोलि कमल द्रग दीन॥
उठे सम्हलि त्रिभुवन पती। प्रियहिं लीन उर लाय॥
हर्षि गोपियाँ जै कही। दम्पति रहे मुस क्याय॥

(विजनिश)

वार्ता—महारानी सखियों युक्त आतुरता से प्राण जीवन के निकट जा कर अच्छी प्रकार दर्श कर शिरको गोद में रख अलकों को सम्हाल मुखार विन्द केवड़ा और गुलाब जल से धो रुमाल से पोछ ब्यारि डोला रहीं हैं ललिता चर्ण दवा रही है कोमल करों को हौले २ चंद्रानना दवा रही है ऐसे सरिस उत योग से श्री मन भावन त्रिलोक पति कमल नैनों को खोल देते हैं अच्छी प्रकार सम्हल कर खड़े हो जाते हैं और आतुरता से प्रिया की बाँह पकड़ गले लगा लेते हैं यह देख सखियाँ मुदित हो हो

कहती हैं) श्री युगुल बिहारी जी की जै (फिर कहती हैं मनहारी की जै हो जै हो जैं हो! यह युगुल छवि की प्यासी हमारी आँखे शदा दर्श प्यासी वारी होवे (दम्पति जू मुस कुरा रहेहैं फिर मन भावन प्रिया युक्त गलवाहीं किये सिहासन में आसीन हो परस्पर छवि विलोकि हँसते बतराते दर्शन दे रहे हैं)

चंद्रानना बचन

दोहा

अरी सखी कर आर्ती। दम्पति जी की आय ॥
उपमाँ तो कछु है नहीं। दर्श हर्ष उमड़ाय ॥

वार्ता—अरी पुष्पा श्री दंम्पति पर आर्ती वार दर्श कर आनंद लेनो चही।

पुष्पा

अच्छो बीर आर्ती लाऊँ हूँ ।

समाजी

(विजनिश)

पुष्पा आरती साजने जाती है श्री मन भावन सब सखियों को आनंदित कर हँसाते हैं।

दीना नाथ

अरी प्यारियो त्यारो हूँ प्रेम धन्य है भली भाँति परख्यो जा चुक्यो है।

ललिता

अच्छे परखने वाले दर्श तो कभी कभी देते हो और तड़पाते शदा हीं हो

चंद्रानना

यही नट खटी है भला बिना यह बाँकी छवि बिलोके जीवन चैन से गुजारो जा सकतो है।

कुमुदा

बार्ता—तबहीं तो वैद्य जू दवाई देने सूँ लाचार व्है गये। विसाखा अरी यह कारो जाको डस्यो वाको नस्यों वा फिर जग व्यवहारी कामों को नहीं रह जातो याको मंत्र हूँ नहीं है।

चित्रा

डस्यो तो हुई है कहा काजघर जग से जब यासू हीं मन बस्यो हो (सब सखियाँ हँसती व ताली बजाकर कहती है) हाँरी चित्रा तूँ नीकी कही आखिर चित्रा हीं तो हो।

(विजनिश)

पुष्पा आर्ती लेकर आ गई मधुमालती आर्ती वार्ती हैं सखियाँ आर्ती गान करती हैं)

आर्ती—तर्ज लावनी

अरी सखी कर दर्श युगुल यह सुघर आर्ती नटखट की॥
मन मूँरत अटकी दृग अट पट की जानन वारो घट घट की ॥१॥
यापै वारूँ सुक्कृत सारो अवन फिरूँ दर दर भटकी।
बलि हारी याके चर्णों की जो काटत फाँसी यम घट की ॥२॥
प्रेम विहारी गिरवर धारी यासो लगन लगी टटकी।
राखूँ निशि याम सुनैनन में करि ओट ढापि पल की फटकी ॥३॥
नहिं छोड़ि सकूँ तुम्हें कीर्ति कृष्ण जावोगे कहाँ हूँ पद अटकी॥
निर्वाह करो रखि शरनन में सह चुकी बहुत दिन लट पटकी ॥४॥

समाजी

(विजनिश)

बार्ता—सखियाँ आर्ती वार कर पुष्प वर्षा कर प्राणाम कर कहती हैं)श्री दम्पति लली लाल की जै (एकीसाथ)जै हो जै हो जै हो महा मोहन की जै बारंबार जै।

चंद्रा वली

अरी सजनी चलो हम सभो और हूँ सेवा करिवे की त्यारी करें सो यह कि पाक रचें शेज सवाँरें हार गूँथे पान लगावें यूँहीं तो अनेकों सेविकायें हैं परन्तु हमारी हूँ इच्छा है याते चलो इन दूनों को आनंद लेने दो।

चित्रा आदि सखियाँ

अच्छो कह्यो है वीर चलो (सव सखी जाती हैं।

इति

विनै

दोहा

दया सिन्धु विनतो सुनहु। दुक्ख सह्यो नहि जात॥
कीर्ति कृष्ण दे दर्श अब। मेंटि देहु शंताप॥

इति

श्री कीर्ति संजीवनी समाप्तं।
श्री मान दीना नाथार्पण मस्तु शुभम
भूयात्

—:o:—